MP Board Class 8th Sanskrit Notes Chapter 17 सत्कर्म एव धर्मः

सत्कर्म एव धर्मः हिन्दी अनुवाद

एकदा विक्रमादित्यः नगरभ्रमणसमये एकम् मरणासन्नं रुग्णं दृष्टवान्। तस्य दर्शनेन मनसि उद्भूतम्। अतः मायामोहमयं संसारं ज्ञात्वा सः महामन्त्रिणि राज्यभारं समर्प्य वनम् अगच्छत्।

अनुवाद :
एक बार विक्रमादित्य ने नगर में भ्रमण के समय एक मरणासन्न (मरने के निकट) रोगी को देखा। उसको देखने से मन में वैराग्य उत्पन्न हुआ। इसलिए माया मोह से भरे संसार को जानकर वह महामन्त्री को राज्यभार सौंपकर वन चले गये।

वने सः कठिना तपस्याम् आरब्धवान्। तस्य समीपे एव एकः महात्मा अपि तपस्यारतः आसीत्। महात्मा तम् अवदत्, "राजन्! भवान् तु यथानीति राजधर्मस्य पालनं करोतु। धर्मानुकूलं शासनम् अपि धर्म एव भवति" इति स महात्मा विक्रमादित्यम् उपदिष्टवान्। विक्रमः अवदत्-"नहि महात्मन्! तपसा एव परलोकः साध्यते, कर्मणा नेति।" महात्मा अवदत्, "राजन! राज्ञः धर्मः प्रजापालनं, शासनम् एव अस्ति तपस्या तु महात्मानां कर्म इति।" इत्युक्त्वा महात्मा राजानाम् पृष्टवन्-कर्म-तपस्ययोः कः भेदः?

अनुवाद :
वन में उन्होंने कठिन तपस्या आरम्भ कर दी। उनके पास में एक महात्मा भी तपस्यारत (तपस्या में लगे) थे। महात्मा ने उनसे कहा, "हे राजन्! आप तो नीति के अनुसार राजधर्म का पालन करो। धर्म के अनुकूल शासन भी धर्म ही होता है।" इस प्रकार उस महात्मा ने विक्रमादित्य को उपदेश दिया। विक्रम ने कहा-"नहीं महात्मन्! तपस्या से ही परलोक प्राप्त होता है, कर्म से नहीं।" महात्मा ने कहा, "हे राजन्! राजा का धर्म प्रजा का पालन और शासन ही है, तपस्या तो महात्माओं का काम है।" ऐसा कहकर महात्मा ने राजा से पूछा-कर्म और तपस्या में क्या भेद है?

राजा अवदत्-कर्मणः स्थानम् भिन्नम् परं तपस्या स्वर्गप्राप्तेः साधनम्। एतच्छ्रुत्वा महात्मा हसन् अवदत्-"राजन् ! मनुष्यः उत्तमानि कर्माणि कृत्वा अपि परलोकं साधयितुम् शक्नोति।" अनन्तरम् महात्मा योगबलेन तत्रैव यमलोकस्य दृश्यं विक्रमं दर्शितवान्। दृश्ये यमराजः दूतान् पृच्छति-"एतस्य कर्म कीदृशम् ?" एकः दूतः अवदत्-"कर्मणां लेखनं तु चित्रगुप्तस्य पार्वे अस्ति।" क्षणं विचार्य यमराजः दूतान् आदिष्टवान् यत्-"यदि एतस्य कर्माणि उत्तमानि सन्ति तर्हि स्वर्गस्य द्वारम् उद्घाटयतु यदि कर्माणि अधमानि, तदा बलात् नरके पातयतु।"

अनुवाद :
राजा ने कहा-कर्म का स्थान भिन्न है परन्तु तपस्या स्वर्ग प्राप्ति का साधन है। ऐसा सुनकर महात्मा हँसते हुए बोले-"हे राजन्! मनुष्य अच्छे कर्म करके भी परलोक सिद्ध कर सकता है।" इसके बाद महात्मा ने योग के बल से वहीं यमलोक का दृश्य विक्रम को दिखाया। दृश्य में यमराज दूतों से पूछ रहे हैं-"इसका कर्म कैसा है? एक दूत ने कहा-"कर्मों का लेखा तो चित्रगुप्त के पास है।" कुछ देर विचार करके यमराज ने दूतों को आदेश दिया कि-यदि इसके कर्म अच्छे हैं तो स्वर्ग का द्वार खोल दो यदि कर्म बुरे हैं तो जबरदस्ती नरक में डाल दो।"

इदं दृश्यं दृष्ट्वा विक्रमः ज्ञातवान् यद्-'सदाचारः एव तपस्या, सत्कर्म एव धर्म' इति। अनन्तरं सः तम् महात्मानम् प्रणम्य, श्रेष्ठाचरणस्य प्रतिज्ञां कृत्वा राजधानीम् उज्जयिनीम् आगतवान्। आगत्य धर्मानुकूलंनीतिपूर्वकम् प्रजापालनपुरस्सरं शासनं कृतवान्। सः अद्यापि लोके सत्कर्मणा एव प्रसिद्धः। तस्य जीवनस्य ध्येयवाक्यम् आसीत्-'सत्कर्म एव धर्मः।'

अनुवाद :
इस दृश्य को देखकर विक्रम जान गये कि-"सदाचार (अच्छा व्यवहार) ही तपस्या है और सत्कर्म (अच्छे कर्म) ही धर्म।" इसके बाद वह उन महात्मा को प्रणाम करके, श्रेष्ठ आचरण की प्रतिज्ञा करके राजधानी उज्जयिनी आ गये। आकर धर्म के अनुसार नीतिपूर्वक प्रजा पालन को प्रमुखता देते हुए शासन किया। वह आज भी संसार में अच्छे कर्म से ही प्रसिद्ध हैं। उनके जीवन का ध्येय वाक्य था-'सत्कर्म ही धर्म है।'

शब्दार्थाः

बलात् = बलपूर्वक। साधयितुम् = सिद्ध करने लिए। पार्वे = पास में। प्रजापालनपुरस्सरम् = प्रजापालन को प्रमुखता देते हुए। मरणासन्न = मरने के निकट। उद्भूतम् = उत्पन्न हुआ। पातयतु = गिराओ। एतच्छ्रुत्वा = ऐसा सुनकर।

https://www.evidyarthi.in/